जीवन की सुबह की | By Mukesh Bagda |

जीवन की सुबह की
कहीं हो न जाए रात
मुझको दर पे बुला लो
ओ बद्रीनाथ
मैं भी अपने दिल की
तुमसे कर लूं दो बात
मैं हूँ भव में फँसा
थाम लो मेरा हाथ
जीवन की सुबह की
कहीं हो न जाए रात

मैंने तो न जीवन में
कोई पाप कमाया है,
फिर क्यों हे नारायण
मुझको दर न बुलाया है
भूल हुई क्या मुझसे
बस इतना बतला दो
भूल हुई क्या मुझसे
बस इतना बतला दो
तेरे दर आऊँगा जोड़
दोनों मैं हाथ
जीवन की सुबह की
कहीं हो न जाए रात

पावन धाम पे आके
मैं भी मुक्ति को पाऊँ
तेरी सुंदर मूरत को
नैनों में बसाऊँ
प्यास तेरे दर्शन की
दर्शन तो करा दो
प्यास तेरे दर्शन की
दर्शन तो करा दो
लक्ष्मी के स्वामी तुम
तुम ही दीनों के नाथ
जीवन की सुबह की
कहीं हो न जाए रात

धन दौलत न मांगू
न मांगू चाँदी और सोना
अपना सेवदार बना लो
दे दो एक कोना
कौन जतन कर आऊँ
दर पे ये बतला दो
कौन जतन कर आऊँ
दर पे ये बतला दो
अपने कृपा का रख दो
मेरे सिर पे हाथ

जीवन की सुबह की
कहीं हो न जाए रात

तुम जिसको भी चाहते हो
अपने दर बुलाते
मुझको ही न क्यों तुम
अपने दर्शन कराते
भाग मेरे हैं सोए
दर्शन दो जगा दो
भाग मेरे हैं सोए
दर्शन दो जगा दो
सारे जीवन नारायण
रहूं तेरे साथ
जीवन की सुबह की
कहीं हो न जाए रात

जीवन की सुबह की
कहीं हो न जाए रात
मुझको दर पे बुला लो
ओ बद्रीनाथ
मैं भी अपने दिल की
तुमसे कर लूं दो बात
मैं हूँ भव में फँसा
थाम लो मेरा हाथ
जीवन की सुबह की
कहीं हो न जाए रात

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9c%e0%a5%80%e0%a4%b5%e0%a4%a8-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%b8%e0%a5%81%e0%a4%ac%e0%a4%b9-%e0%a4%95%e0%a5%80-by-mukesh-bagda/